मूत्रम ग्रन्थ उपलभ्य: [illegible]

[illegible]

"चैतन्यमाला"

[illegible]

"शारदा - लिपि

डा॰ शुभदर्शन राम त्रिपाठी

[illegible]

का

[illegible]

एक व्यवस्थित

[illegible]

शिक्षक"

[illegible]

"शोध - कर्ता"

[illegible]

"डॉ॰ त्रिलोकीनाथ गंजू

[illegible]

४२ - छन्नू पार्क श्रीनगर

[illegible]

कश्मीर

[illegible]

"प्रस्तुत पाण्डुलिपि का मुद्रण -

[illegible]

एवं प्रकाशन लेखक के अधीन -

[illegible]

सुरक्षित है"

[illegible]

Xeroxed and supplied to participants in the [illegible] Advanced Workshop on Manuscriptology & Palaeography organised by National Mission for Manuscripts in collaboration with [illegible] Oriental Research Institute, Tirupati [illegible] University and Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha (Deemed University), Tirupati from 8th January to 15th February 20[illegible]

भूमिका
(भूमिका)

शारदा-लिपि के उद्भव और विकास के परिप्रेक्ष्य में अभी तक हम भारतीयों का दृष्टिकोण पाश्चात्य-विद्वानों द्वारा प्रस्थापित मान्यता के आगे अन्वेषण-दिशा में अग्रसर नहीं बढ़ पाया है, क्योंकि हम और शासन और स्वयंसेवी-संस्थाएँ एक लंबे समय तक उदासीनता में निष्क्रिय बने रहे, अतः जो भी उपलब्ध है, अतीत का है। नया क्षेत्रीय-खोज अभी भी नगण्य है।

इतिहासकार कल्हण अपनी राजतरङ्गिणी में प्राचीनतम शारदा-लिपि के इतिहास का साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए — कहते हैं :—

(क) प्रशस्ति शारदा पद्धैः
(ख) प्रतिष्ठा वस्तु शासनैः
(ग) रेखै मकारं वणिजा कारितं

इन अभिलेख-शास्त्रों की क्या नियति हुई, इसका
ऐतिहासिक-साक्ष्य कश्मीर के परवर्ती इतिहा-
सकार जोनराज अपनी राजतरंगिणी में,
ईसी 1435 के युग में, प्रस्तुत कर चुके हैं:—

"दग्धोऽस्य पत्रैः कृतः"

लङ्का के महावंश-इतिहास के
आधार पर तथा राजतरङ्गिणी-शास्त्र के आधार
पर मौर्य सम्राट अशोक 269 ई०पू० 300 माध्यमिक
भिक्षुओं को लेकर कश्मीर में बौद्ध-धर्म का
प्रचार करते आए। इसका प्रत्यक्ष तथा परोक्ष
विवरण विशालकाय गिलगित मैन्युस्क्रिप्ट्स में
विशद रूप से मिलता है। ईसा की चौथी शती
के बौद्ध-दार्शनिक सिद्धान्त के "अभिधर्म-कोश"
जैसे महाग्रन्थ-ग्रन्थ के लेखक आचार्य वसुबन्धु
ने अपने इस प्रामाणिक ग्रन्थ में माध्यमिक,
सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक इन —

चारों ही बौद्ध संप्रदायों के चिन्तन पर महा-
भाष्य लिखा। आचार्य अपने अभिधर्मकोश में
उद्घोष करते हुए कहते हैं:—
"कश्मीर वैभाषिक नीति सिद्धः प्रायो मयायं
लिखितोऽभिधर्मः"
यह स्वीकृत तथ्य है कि शारदा लिपि के बिना
उन के पास और कोई भी लिपि नहीं थी।
चीन देश के दो धार्मिक यात्रियों ने, अर्थात्, बौद्ध-
धर्म के अन्वेषक, औ-कौं-आङ्ग और महान्
बौद्धभिक्षु युआन च्वाङ्ग ने अपने यात्रा-वर्णन में
यहां की लिपि के गहन अध्ययन और पठन-पाठन
की प्रक्रिया को स्वीकार किया है। बौद्धभिक्षु
ह्यून त्सांग श्रीनगर (कश्मीर) के जैनेन्द्र विहा-
र में रहकर बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन, चिन्तन
और लिपिन्तर तथा चीनी भाषा में अनुवाद भी
करते रहे। निश्चय ही इन ग्रन्थों में

संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का एक
अपार साहित्य रहा होगा।

लेखों के आधार पर कश्मीर के
शैवदर्शन का आधारभूत ग्रन्थ शिवसूत्र भी
आचार्य वसुगुप्त की कठिन तपस्या, सतत -
अन्वेषण तथा गहन-खोज के उपरान्त ही
महादेव घाटी के स्थल पर शंकर-उत्पल
पर अंकित थे। जिस पर 77 सूत्र उकारे हुए थे। यह
भी शारदा लिपि में ही लिखे हुए थे।

वस्तुतः साक्ष्य निश्चय ही एक
चौंकाने वाला तथ्य है कि जापान के हौरयुजी
विहार में "उष्णीष-विजय धारिणी" का एक
ग्रन्थ है। यह ताड़पत्र पर लिखा हुआ ग्रन्थ है।
इस ताड़-ग्रन्थ के अन्त पर सम्पूर्ण शारदा
वर्णमाला अङ्कित है। इसका ऐतिहासिक
काल-खण्ड ईसा की पाँचवीं शताब्दी आंका-

जाता है। इसका तात्पर्य यह निकल आता है कि
ईसा की पाँचवीं शती में कश्मीर की शारदा-लिपि का
भौगोलिक विस्तार पूर्वी-प्रशान्त सागर के तटों के
आगे फैल चुका था। मास्को में आयोजित कुषाण-
साम्राज्य" की संगोष्ठी में डॉ० गफूरोव ने अपने
शोधपत्र में इस बात का सबूत प्रमाण प्रस्तुत
किया है कि बालू रेगिस्तान के आसपास शारदा
लिपि के चिरप्राचीन साक्ष्य मिले हैं।

ईसा की दसवीं शती के आरम्भ में
अलहिन्द ग्रन्थ के रचनाकार अलबेरूनी ने
भी अपने इतिहास में कश्मीर की लिपि शारदा
का उल्लेख "सिद्ध मातृका के नामकरण से किया
है।

प्राचीन कश्मीर के शारदा-लिपि
के शिलालेख अभी तक उपलब्ध १४ पंजीकृत
हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त शारदा लिपि में

अङ्कित राजकीय प्राचीन-मुद्राओं का अपार
कोष शोध के विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित है। आश्चर्य
तो यह है कि चीन देश के तऊँग-साम्राज्य के
इतिहास में भी कश्मीर की लिपि शारदा का
उल्लेख आया है।

उत्तर भारत में शारदा लिपि का
प्रचार, प्रसार और लिखित अभिव्यक्ति का
एकाकी माध्यम ईसा की सोलहवीं शती तक
पंजाब, हरियाना, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू
से लेकर रामबन-कश्तवार तक फैल चुका-
था। इस के उपरान्त उत्तरोत्तर युगों के परिष्कार
और संस्कार के फलस्वरूप शारदा लिपि ने
पंजाब की गुरुमुखी, टाकरी, डोगरी, राम-
बनी आदि अनेक लिपियों को जन्म दिया।
यह कहना असंगत नहीं होगा कि मौलिक
शारदा लिपि की छाप अभी भी विद्यमान है।

भारत के पूर्व में शारदा लिपि का भौगोलिक
विस्तार तथा विकास तिब्बत के दुर्गम मुल्कों
के कोने-कोने में रम चुका है। इस प्रकार शारदा लिपि
ने एक ओर अपने अनुरूप लिपि को जन्म दिया,
जो आज तिब्बती-लिपि कहलाती है। इस का
साक्ष्य तिब्बत के महान् आचार्य लामा तारा-
नाथ ने अपने इतिहास में उद्धृत किया है। इस समय
शारदा लिपि में लिखे हुए पाण्डुलिपियों की
संख्या एक लाख से भी अधिक है।

निवेदक:

"त्रिलोकीनाथ गंजू"
मल्लू-पाइन श्रीनगर
कश्मीर-190001

गुरुपूर्णिमा,
सप्तर्षि शुभसंवत् 5083
– जुलाई 2006.

ॐ श्रीगणेशाय नमः

(ॐ श्रीगणेशाय नमः)

शारदा लिपि के स्वर :

(शारदा लिपि के स्वर)

𑆃 𑆄 𑆅 𑆆 𑆇 𑆈 𑆉 𑆊 𑆋 𑆌

(अ) (आ) (इ) (ई) (उ) (ऊ) (ऋ) (ॠ) (ऌ) (ॡ)

𑆍 𑆎 𑆏 𑆐 𑆃𑆁 𑆃𑆂

(ए) (ऐ) (ओ) (औ) (अं) (अः)

शारदा लिपि के व्यंजन :

(शारदा लिपि के व्यंजन)

𑆑 𑆒 𑆓 𑆔 𑆕

(क) (ख) (ग) (घ) (ङ)

𑆖 𑆗 𑆘 𑆙 𑆚 (𑆚 > ञा)

(च) (छ) (ज) (झ) (ञ)

𑆛 𑆜 𑆝 𑆞 𑆟

(ट) (ठ) (ड) (ढ) (ण)

𑆠 𑆡 𑆢 𑆣 𑆤

(त) (थ) (द) (ध) (न)

𑆥 𑆦 𑆧 𑆨 𑆩

(प) (फ) (ब) (भ) (म)

𑆪 𑆫 𑆬 𑆮

(य) (र) (ल) (व)

𑆯 𑆰 𑆱 𑆲

(ष) (स) (ह)

शारदा लिपि के संयुक्त अक्षर :

(शारदा लिपि के संयुक्त अक्षर)

𑆑𑇀𑆰 𑆠𑇀𑆫 𑆘𑇀𑆚 (𑆘𑇀𑆚 > ज्ञा)

(क्ष) (त्र) (ज्ञ)

शारदा लिपि में बीज / 𑆘𑇀𑆚𑆻 / (ज्ञा)

(शारदा लिपि के / बीज / ज्ञौ / (ज्ञा))

(शारदा लिपि की स्वर-प्रक्रिया)

/अ/, (मात्रा, हलन्त हीन) (क, च, त, प, भ, म, य)

/आ/, (मात्रा) (का, चा, ता, पा, भा, मा, या)

/इ/, (मात्रा) (कि, चि, ति, पि, भि, मि, यि)

/ई/, (मात्रा) (की, ची, ती, पी, भी, मी, यी)

/उ/, (मात्रा) (कु, चु, तु, पु, भु, मु, यु)

/ऊ/ (मात्रा) (कू, चू, तू, पू, भू, मू, यू)

(विशेष सूचना) :— (शारदा लिपि के पाण्डुलिपियों में — /उ, ऊ/ मात्राओं के वैकल्पिक प्रयोगों का प्रचलन मिलता है। इसका स्पष्टीकरण पृष्ठ-संख्या 6-8 में स्पष्ट हुआ है।

/𑆈/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆸) 𑆑𑆸, 𑆓𑆸, 𑆠𑆸, 𑆥𑆸, 𑆲𑆸, 𑆩𑆸, 𑆪𑆸,
(ऋ) (मात्रा)
(कृ, गृ, तृ, पृ, हृ, मृ, यृ)

/𑆉/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆹) 𑆑𑆹, 𑆓𑆹, 𑆠𑆹, 𑆥𑆹, 𑆲𑆹, 𑆩𑆹, 𑆪𑆹,
(ॠ) (मात्रा)

/𑆍/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆼) 𑆑𑆼, 𑆓𑆼, 𑆠𑆼, 𑆥𑆼, 𑆲𑆼, 𑆩𑆼, 𑆪𑆼;
(ए) (मात्रा)

/𑆎/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆽) 𑆑𑆽, 𑆓𑆽, 𑆠𑆽, 𑆥𑆽, 𑆲𑆽, 𑆩𑆽, 𑆪𑆽,
(ऐ) (मात्रा)

/𑆏/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆾) 𑆑𑆾, 𑆓𑆾, 𑆠𑆾, 𑆥𑆾, 𑆲𑆾, 𑆩𑆾, 𑆪𑆾,
(ओ) (मात्रा)

(दूसरा) /𑆏/

/𑆐/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆿) 𑆑𑆿, 𑆓𑆿, 𑆠𑆿, 𑆥𑆿, 𑆲𑆿, 𑆩𑆿, 𑆪𑆿,
(औ) (मात्रा)

/𑆃𑆁/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆁) 𑆃𑆁, 𑆑𑆁, 𑆠𑆁, 𑆥𑆁,
(अं) (मात्रा)

/𑆃𑆂/, (𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 > 𑆂) 𑆃𑆂, 𑆑𑆂, 𑆠𑆂, 𑆥𑆂,
(अः) (मात्रा)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳-𑆥𑇀𑆫𑆪𑆺𑆓 :—
(शारदा लिपि में मात्रा-प्रयोग) :—

/𑆑/ (क)

क का कि की कु कू कृ कॄ के —
(ਕ) (ਕਾ) (ਕਿ) (ਕੀ) (ਕੁ) (ਕੂ) (ਕ੍ਰਿ) (ਕ੍ਰੀ) (ਕੇ)

कै को कौ कं क: ;
(ਕੈ) (ਕੋ) (ਕੌ) (ਕੰ) (ਕ:)

/ਜ/ (ज)

ਜ ਜਾ ਜਿ ਜੀ ਜੁ ਜੂ ਜੇ ਜੈ ਜੋ —
(ज) (जा) (जि) (जी) (जु) (जू) (जे) (जै) (जो)

ਜੌ ਜੰ ਜ: ; (ਜ > ज)
(जौ) (जं) (ज:)

/ਤ/ (त)

ਤ ਤਾ ਤਿ ਤੀ ਤੁ(ਤੁ) ਤੂ ਤੇ ਤੈ ਤੋ —
(त) (ता) (ति) (ती) (तु) (तू) ते तै तो

ਤੌ ਤੰ ਤ: ; । (ਤ > त)
तौ तं त:

/ਧ/ (ध)

ਧ ਧਾ ਧਿ ਧੀ ਧੁ ਧੂ ਧੇ ਧੈ ਧੋ —
(ध) (धा) (धि) (धी) (धु) (धू) (धे) (धै) (धो)

ਧੌ ਧੰ ਧ: ; (ਧ > ध)
(धौ) (धं) (ध:)

/ਪ/ (प)

ਪ ਪਾ ਪਿ ਪੀ ਪੁ ਪੂ ਪੇ ਪੈ ਪੋ
(प) (पा) (पि) (पी) (पु) (पू) (पे) (पै) (पो)

ਪੌ ਪੰ ਪ: ; (ਪ > प)
(पौ) (पं) (प:)

/ਮ/ (म)

ਮ ਮਾ ਮਿ ਮੀ ਮੁ ਮੂ ਮੇ ਮੈ ਮੋ ਮੌ

ਮੰ ਮ: ; (ਮ > म)

(शारदा लिपि में मात्रा एवं वर्ण की संलग्नता का स्वरूप)

/अ/ (×)

(अगाद) (अक्षय) (अयन) (अमल)
(वन) (तरल) (सरल) (गरल)
(पवन) (कमल) (वदन) (जनक)
(कलरव) (शलभ) (जलद) (नभ)
(अभाव) (अनाथ) (अनन्त) (अलं)

/आ/ (ा)

(आलय) (कारागार) (जलधारा)
(आलवाल) (चालक) (पालक)
(गायक) (नायक) (सहायक)
(कारक) (तारक) (धारक)
(आशा) (आचार) (आकाश) (धारक)

/इ/ (ि)

(किन्नर) (किरात) (किसलय)
(गिरिजा) (हरि) (दिन) (भिन्न)
(चिरात) (तिलक) (इंद्राणी)
(चिदाकाश) (विकृति) (हरित)
(इन्दु) (इच्छित) (इडा) (इति)

/ई/ (ी)

(ईश्वर) (कीटक) (ईशान) (धीर)
(ईक्ष) (जीर) (जीवन) (नदी)
(तीर) (दीक्षा) (धीवर) (नील)
(पीत) (नीरज) (पीवर) (पीयूष)

/उ/ (ु)

(तुषार) (उन्मेष) (उपदेश)
(उग्र) (उपाय) (उदय) (कुचर)
(कुलाल) (कुसुम) (तुषार) (भुवनेश)
(मुनि) (युग) (रुचि) (शुक) (श्रुत)

(ਉ) ਹ੍ਰਸ੍ਵ ਸ੍ਵਰ ਏਵੰ ਮਾਤ੍ਰਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

1. (ਉ) ਉਦਯ, ਉਤ੍ਸਵ, ਉਪਾਯ
2. (ਉ) ਕੁਮਾਰ, ਕੁਸ਼ਾ, ਕੁਲਾਲ
3. (ਉ) ਕਮਿ ਕਦ੍ਰੁ- ਕਦ੍ਰੁ
4. (ਉ) ਤੁਰਾ ਤੁਲਾ ਤੁਯ
5. (ਉ) ਸ੍ਵਸੁਰ ਸਸੁਲ ਸੁਕ
6. (ਉ) ਖੁਰ, ਗੁਲ੍ਮ, ਸੁਰ
7. (ਉ) ਸ੍ਰੁਤ ਸ੍ਰੁਕ, ਸ੍ਰੁਤ

(ਊ) ਦੀਰ੍ਘ ਸ੍ਵਰ ਏਵੰ ਮਾਤ੍ਰਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

1. (ਊ) ਊਖਲ, ਊਰ੍ਮਿ, ਊਕ
2. (ਊ) ਕੂਪ ਕੂਲ, ਕੂਸ਼ਾਨ
3. (ਊ) ਤੂਪ ਤੂਠਲ ਤੂਸ
4. (ਊ) ਤੂਲ, ਤੂਰਾ ਤੂਰ
5. (ਊ) ਸੂਰ, ਸੂਲ, ਸੂਮ
6. ਊ ਖੂਰ, ਪੂਤ, ਕੂਸ
7. ਊ ਸ੍ਰੂ ਸ੍ਰੂਯਤਮਾ
ਸ੍ਰੂਲਤਾ, ਸ੍ਰੂਨੂ

ਸਮਾਪਤਾ

"2 (ਕ) ਮਾਤ੍ਰਾ ਕੋ ਪ੍ਰਯੋਗ"

ੳ ਅ ੲ ਸ ਹ ਕ ਖ ਗ ਘ ਙ ਚ ਛ ਜ ਝ ਞ ਟ ਠ ਡ ਢ ਣ ਤ ਥ ਦ ਧ ਨ ਪ ਫ ਬ ਭ ਮ ਯ ਰ ਲ ਵ ੜ

ਕਾ > ਖਾ > ਗਾ > ਘਾ > ਚਾ > ਛਾ > ਜਾ > ਝਾ > ਟਾ > ਠਾ > ਡਾ > ਢਾ > ਣਾ > ਤਾ > ਥਾ > ਦਾ > ਧਾ > ਨਾ > ਪਾ > ਫਾ > ਬਾ > ਭਾ > ਮਾ > ਯਾ > ਰਾ > ਲਾ

पाठक लिपि के 5 पृष्ठ के पहले इसे प्रस्तुत करवाएँ

तुला (तुला) तूल (तूल) फलक (फलक) मुख (मुख)

तुरुष्का (तुरुष्का) उपमान (उपमान) उपासना (उपासना)

/ऊ/

ऊष्म (ऊष्म) ऊढा (ऊढा) ऊर्मि (ऊर्मि)

मूढ (मूढ) चूडामणि (चूडामणि) नूतन (नूतन)

धूमिल (धूमिल) पूजा (पूजा) दूषित (दूषित)

विशेष-सूचना:—

शारदा पाण्डुलिपि-ग्रन्थों के माध्यम के
(शारदा पाण्डुलिपि-ग्रन्थों के माध्यम के
आधार पर /उ/ एवं /ऊ/ मात्राओं के प्रयोग में
आधार पर /उ/ एवं /ऊ/ मात्राओं के प्रयोग में
वैकल्पिक रूप पाँच प्रकार के उपलब्ध होते हैं:—
वैकल्पिक रूप पाँच प्रकार के उपलब्ध होते हैं:—

/उ/ (1)

उत्पल (उत्पल) उत्साह (उत्साह) उदर (उदर)

उद्भट (उद्भट) उदक (उदक) उपाय (उपाय)

/उ/ (2)

कुमार (कुमार) कुन्तल (कुन्तल) कुमारी (कुमारी)

कुबेर (कुबेर) कुतूहल (कुतूहल) कुरस (कुरस)

/ਉ/(3)

ਰੁਚ੍ਯ (रुच्य) ਰੁੱਠਾ (रुठा) ਰੁਚਿ (रुचि)

ਰੁਦ੍ਰ (रुद्र) ਰੁਧਿਰ (रुधिर) ਰੁਦ੍ਰਾਕ੍ਸ਼ (रुद्राक्ष)

/ਉ/(4) ਸਰਬਸਾਧਾਰਣ ਪ੍ਰਯੋਗ (सर्वसाधारण प्रयोग):—

ਗੁਹਾ (गुहा) ਯੁਗਲ (युगल) ਯੁਗਾਂਤ (युगान्त)

ਖ਼ੁਰ (क्षुर) ਧੁਰ (धुर) ਧੁਣ (धुण) ਧੂਪ (धूप)

ਕੁਟਿਲ (कुटिल) ਕੁਸ਼ਠ (कुष्ठ) ਕੁੰਠਿ (कुण्ठि)

ਤੁਲਸੀ (तुलसी) ਧੁੱਕਾਰ (धुत्कार) ਦੁਰਾਚਾਰ (दुराचार)

ਪੁਨੀਤ (पुनीत) ਅਨੁਨਯ (अनुनय) ਨੁਤਿ (नुति)

ਪੁਤ੍ਰ (पुत्र) ਪੁਰੋਹਿਤ (पुरोहित) ਫੁੱਲ (फुल्ल)

ਬੁਧਾਸ਼੍ਰਮੀ (बुधाश्रमी) ਭੁਵਨ (भुवन) ਮੁਕੁਟ (मुकुट)

ਯੁਗ (युग) ਲੁਬ੍ਧ (लुब्ध) ਬੁਭੁਕ੍ਸ਼ੁ (बुभुक्षु)

ਸ਼ੁਭ (शुभ) ਸ਼ੁਕ੍ਲ (शुक्ल) ਸ੍ਰੁ (स्रु) ਸੁੰਦਰ (सुन्दर)

ਸੁਗੰਧ (सुगन्ध) ਸੁਜਲ (सुजल) ਸੁਪਾ (सुपा)

ਹੁੰਕਾਰ (हुङ्कार) ਹੁਤ (हुत) ਹੁਤਾਸ਼ (हुताश)

/उ/ (5)

श्रु (श्रु) श्रुत (श्रुत) श्रुतकीर्ति (श्रुतकीर्ति)

श्रुतश्रवस (श्रुतश्रवस) श्रुति (श्रुति)

श्रुतिकटु (श्रुतिकटु) श्रुतिधर (श्रुतिधर)

विशेष-सूचना :—

इसी परिपाटी के अनुसार शारदा लिपि के ग्रन्थों में /ऊ/ दीर्घ मात्रा के पाँच प्रयोग मिलते हैं :—

/ऊ/ (1)

ऊरु (ऊरु) ऊर्जा (ऊर्जा) ऊर्मिला (ऊर्मिला)

ऊसर (ऊसर) ऊष्मन् (ऊष्मन्) ऊर्ध्व (ऊर्ध्व)

ऊखल (ऊखल) ऊर्मिनी (ऊर्मिनी)

/ऊ/ (2)

कूप (कूप) कूर्म (कूर्म) कूटस्थ (कूटस्थ)

कूटोपाय (कूटोपाय) कूल (कूल) कूबर (कूबर)

कूटधर्म (कूटधर्म) कूर्ची (कूर्ची)

/ਉ/ (3)

ਰੂਪਕ (रूपक) ਰੂਪ (रूप) ਰੂੜ੍ਹਿ (रूढि

ਰੂਪ੍ਯ (रूप्य) ਰੂਕ੍ਸ਼ (रूक्ष) ਰੂਸ਼ (रूष

/ਉ/ (5) (ਸਰਬ ਸਾਧਾਰਣ ਪ੍ਰਯੋਗ (सर्व साधारण प्रयोग

ਗੂੜ੍ਹਪਥ (गूढपथ) ਗੂਥ (गूथ

ਗੂਰ (गूर) ਘੂਰ (घूर) ਘੂਰ੍ਠ (घूर्ठ)

ਚੂੜ (चूड) ਚੂੜਾ (चूडा) ਜੁਹੂ (जुहू)

ਜੂਤਿ (जूति) ਤੂਣੀਰ (तूणीर) ਸੰਤੂਰ (संतूर)

ਦੂਤ (दूत) ਦੂਸ਼ਣ (दूषण) ਦੂਰ (दूर)

ਧੂਪ (धूप) ਧੂਮ (धूम) ਧੂਮ੍ਰ (धूम्र)

ਨੂਤਨ (नूतन) ਨੂਨਮ (नूनम्) ਨੂਪੁਰ (नूपुर

ਪੂਤ (पूत) ਪੂਜ੍ਯ (पूज्य) ਪੂਰਵ (पूर्व)

ਭੂਗੋਲ (भूगोल) ਭੂਗੋਲ (भूगोल) ਭੂਤ (भूत

ਮੂੜ੍ਹ (मूढ) ਮੂਲਕ (मूलक) ਮੂਸ਼ਕ (मूषक

ਯੂਪ (यूप) ਯੂਤਿ (यूति) ਯੂਥ (यूथ) ਯੂਕ (यू

लूम (लूम) लूत (लूता) लून (लून) लूस (लूस)

व व्रध्रु (वुव्रर्धु) शूकल (शूकल) शूद्र (शूद्र)

शूल्म (शूल्म) शूर (शूर) शूर्प (शूर्प)

षू (षू) सूक्ष्म (सूक्ष्म) सूत्र (सूत्र) सूद (सूद)

आहूत (आहूत) हूति (हूति)

ऊ / (ऽ)

श्रूयताम् (श्रूयताम्) स्रूहि (स्रूहि) क्रूर (क्रूर)

भ्रूलता (भ्रूलता) भ्रूमध्ये (भ्रूमध्ये) भ्रू (भ्रू)

भ्रूण (भ्रूण) भ्रूक्षेप (भ्रूक्षेप) भ्रू [illegible] भ्रूभङ्ग

शुश्रूषा (शुश्रूषा) शत्रूणाम् (शत्रूणाम्)

/ऋ/ (ृ) {ऋ}

ऋण (ऋण) ऋवरा (ऋवरा) क्रुधण (क्रुधण)

धृति (धृति) तृप (तृप) प्रकृति (प्रकृति)

मृग (मृग) गृध्र (गृध्र) तृण (तृण)

ਘ੍ਰਿਤ (घृत) ਸ੍ਰਿਤ (सृत) ਸ੍ਰਿਸ਼੍ਟ (सृष्ट) ਪ੍ਰਿਥਕ (पृथक्)

ਦ੍ਰਿਢ (दृढ) ਸ਼੍ਰਿੰਗ (शृङ्ग) ਸ਼੍ਰਿੰਗਾਰ (शृङ्गार)

ਵ੍ਰਿਸ਼ਭ (वृषभ) ਮ੍ਰਿਣਾਲ (मृणाल) ਸ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (सृष्टि)

ਤ੍ਰਿਤੀਯ (तृतीय) ਹ੍ਰਿਦਯ (हृदय) ਸ਼੍ਰਿੰਗ (शृङ्ग)

ਵਿਸ਼ੇਸ਼-ਸੂਚਨਾ :

(विशेषसूचना) ਅਬ ਵ੍ਯਾਵਹਾਰਿਕ ਭਾਸ਼ਾ ਮੇਂ /ਲ੍ਰਿ/

अब व्यावहारिक भाषा में /ऌ/

ਤਥਾ /ਲ੍ਰਿ/ (ऌ) ਏਵੰ /ਲ੍ਰੀ/ (ॡ) ਕਾ ਭਾਸ਼ਿਕ

तथा /ऌ/ (ऌ) एवं /ॡ/ (ॡ) का भाषिक

ਪ੍ਰਯੋਗ ਉਪੇਕ੍ਸ਼ਿਤ ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਅਤਃ ਸਾਦ੍ਰਿਸ਼੍ਯ ਪ੍ਰਸ੍ਤੁਤ

प्रयोग उपेक्षित हो चुका है। अतः सादृश्य प्रस्तुत

ਕਰਨਾ ਆਵਸ਼੍ਯਕ ਨਹੀਂ ਬਨਤਾ ਹੈ

करना आवश्यक नहीं बनता है)

/ਏ/ (—)

ਏਕ (एक) ਏਕਲ (एकल)

ਏਕਾਦਸ਼ (एकादश) ਏਕਾਂਤਵਾਸ (एकान्तवास)

ਏਕਲਵ੍ਯ (एकलव्य) ਏਕਪਦੀ (एकपदं)

ਕੇਸ਼ਵ (केशव) ਕੇਤਕੀ (केतकी)

ਖੇਲ (खेल) ਤੇਜਸ (तेजस)

ਚੇਤਨਾ (चेतना) ਮੇਲਕ (मेलक) ਧੇਨੁ (धेनु)

ਕੇਂਦ੍ਰ (केन्द्र) ਭੇਦ (भेद) ਮੇਘ (मेघ) ਸ੍ਵੇਦ (स्वेद) (पसीना)

ਏਕਾਕਿਨ (एकाकिन) - ਏਕਾਂਤ (एकान्त) ਏਕਾਯਨ (एका

/ਐ/

ਐਂਦ੍ਰ (ऐन्द्र) ਐਸ਼੍ਵਰ੍ਯ (ऐश्वर्य) ਕੈਲਾਸ਼ (कैलाश)

ਗੈਰਿਕ (गैरिक) ਚੈਤਨ੍ਯ (चैतन्य) ਮੈਤ੍ਰੇਯ (मैत्रेय)

ਦੈਵ (दैव) ਧੈਵਤ (धैवत) ਨੈਵੇਦ੍ਯ (नैवेद्य)

ਸ਼ੈਲ (शैल) ਸੈਕਤ (सैकत) ਹੈਮੀ (हैमी)

ਦੈਨਿਕ (दैनिक) ਤ੍ਰੈਲੋਕ (त्रैलोक) ਦੈਵੀ (दैवी)

ਐਰਾਵਤ (ऐरावत) ਐਹਿਕ (ऐहिक) ਐਸ਼ਾਨੀ (ऐशानी)

/ਓ/ (ੋ)

ਓਜਸ (ओज) ਪੋਰ (पोर) (संज्ञा) ਓਸ਼ਧਿ (ओषधि)

ਕੋਕਿਲ (कोकिल) ਗੋਪਨ (गोपन) ਗੋਕੁਲ (गोकुल)

ਤੋਰਣ (तोरण) ਪੋਖਿਤ (पोषित) ਘੋਰ (घोर)

ਚੋਲ (चोल) ਧੋਰਣ (धोरण) ਜੋਧਾ (योधा) (monofold)

ਪੋਤ (पोत) ਬੋਧ (बोध) ਮੋਦਕ (मोदक)

/ਔ/ (ੌ) ਅਥਵਾ /ਔ/

𑆎𑆫𑆱 (औरस) 𑆎𑆖𑆴𑆠𑇀𑆪 (औचित्य) 𑆑𑆿𑆬 (कौल

𑆩𑆿𑆤 (मौन) 𑆓𑆿𑆫𑆮 (गौरव) 𑆎𑆢𑆳𑆠𑇀𑆠 (औदात्त

𑆓𑆿𑆠𑆩 (गौतम) 𑆩𑆿𑆬 (मौल) 𑆱𑆿𑆫 (सौर

𑆑𑆿𑆫𑆮 (कौरव) 𑆪𑆿𑆓𑆴𑆑 (यौगिक) 𑆫𑆿𑆢𑇀𑆫 (रौद्र

𑆎𑆰𑆣 (औषध) 𑆎𑆥𑆖𑆳𑆫𑆴𑆑 (औपचारिक)

/𑆁/ + 𑆂: 𑆑𑆁, 𑆠𑆁, 𑆫𑆳𑆩𑆁, 𑆃𑆘𑆁, 𑆩𑆶𑆒𑆁,

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆫𑆳𑆩𑆂 (श्रीरामः) 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆂 (श्रीकृष्णः)

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆓𑆿𑆠𑆩𑆂 (श्रीगौतमः) 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆤𑆳𑆤𑆑𑆂 (श्रीनानक

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆃𑆨𑆴𑆤𑆮𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠𑆂 (श्रीअभिनवगुप्तः) 𑆃𑆯𑇀𑆮𑆂 (अश्वः

𑆤𑆫𑆂 (नरः) 𑆩𑆪𑆷𑆫𑆂 (मयूरः) 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆂 (मानव

/𑆑/ 𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆁𑆬𑆓𑇀𑆤 𑆢𑇀𑆮𑆳𑆢𑆯-𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆃𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆾𑆓𑆂—
(/क/ वर्ण में संलग्न द्वादश — मात्राओं का प्रयोग :-)

𑆑 (क), 𑆑𑆳 (का), 𑆑𑆴 (कि) 𑆑𑆵 (की) 𑆑𑆶 (कु)

𑆑𑆷 (कू) "OR > 𑆑𑆷" (कू) (अपि [illegible]) 𑆑𑆸 (कृ) 𑆑𑆹 (कॄ)

𑆑𑆼 (के) 𑆑𑆽 (कै) 𑆑𑆾 (को) 𑆑𑆿 (कौ)

𑆑𑆁 (कं) 𑆑𑆂 (कः)

विशेष-सूचना :—
(विशेष - सूचना)

शारदा लिपि की प्रकृति में /उ, ऊ, ऋ/
(शारदा लिपि की प्रकृति में /उ, ऊ, ऋ/
मात्राओं का रूप देवनागरी लिपि से भिन्न है :—
मात्राओं का रूप देवनागरी लिपि से भिन्न है)

I. देवनागरी :— कु, कू, कृ
(देवनागरी)

II. शारदा :— कु, कू, कृ
(शारदा)

III. शारदा :— क् + र = क्र (क् + र = क्र)
(शारदा)

—— ० ——

एक ही अनुच्छेद में समस्त मात्राओं
(एक ही अनुच्छेद में समस्त मात्राओं
का वाक्य प्रयोग :—
का वाक्य प्रयोग)

इदानीं अस्मिन् गृहे न कोऽपि अ
(इदानीं अस्मिन् गृहे न कोऽपि

निवसति। संप्रति दौवारिक अत्र गृहरक्षां करोति।
निवसति। संप्रति दौवारिक अत्र गृहरक्षां करोति
गृहस्य समीपे जलपूरित-कूपोऽपि अस्ति। अदूरे
गृहस्य समीपे जलपूरित-कूपोऽपि अस्ति। अदूरे
सुदूरे ईशानस्य सूर्यमन्दिरमपि अस्ति।
सुदूरे ईशानस्य सूर्यमन्दिरमपि अस्ति।)

—— ० ——

नियम-संख्या (1)

शारदा-लिपि की प्रकृति में जब
(शारदा - लिपि की प्रकृति में जब
अग्र — हलन्त /र/ के पश्च में मूर्धन्य /ण/
अग्र — हलन्त /र/ के पश्च में मूर्धन्य /ण/
आता है, तो एक नये आकार का संयुक्त-अक्षर
आता है, तो एक नये आकार का संयुक्त-अक्षर

उकर का भुउ ळ। यथा :- / ग + ण / = "ळ" ।(ळ
उभर- कर आता है। यथा :- / र + णा / = ळ, शारदा>ळ)

विसेधिउ उदाकरण :—
(विशेष उदाहरणा)

(म) करण > कळ (कर्ण)

(भु) वरण > वळ (वर्ण)

भाभाचू रोध के लिआ भतुभ- धूक्रिया :——
सामान्य बोध के लिए अभ्यास प्रक्रिया)

धळ (दर्ण) शीळ (शीर्ण) मीळ (शीर्ण) धूळ (घूर्ण)

धूळ (पूर्ण) सूळ (चूर्ण) कळी (कर्णी) डील (तीर्ण)

कळाटक (कर्णाटक) कळिकार (कर्णिकार) उर्लि (तार्णि

कळक: (कर्णक:) कळिल (कर्णिल) निळय: (निर्णय

सुपळ (सुपर्ण) कळकळि (कर्णाकर्णि) उाळसभा (तार्णस

धळल (धर्षणल) तुळभय (तूर्णमय) धूळिभ (पूर्णिमा)

निळायक (निर्णायक) धळस (घर्षस) अळव (अर्णव

वळनभ (वर्णनम) कळपाली (कर्णपाली) कळिक (कर्णि

वळ (वर्ण) वळक (वर्णक) वळतुलि (वर्णतूलि

विसेध-भूपना :—
(विशेष - सूचना)

नियम - (2) शारदा - लिपि की प्रकृति में उन सी अन्य — हलन्त /र/ के पश्च में /य/ वर्ण आता है, तो एक नये आकार का संयुक्त-व्यञ्जन उभर कर आता है। यथा :- /र+य/ = द (र्य)

निम्नलिखित उदाहरण :—

(अ) कार्य > काद (कार्य) (कारय)

(आ) वर्य > वद (वर्य) (वरय)

शारदा अभ्यास के लिये अनुक्रम-प्रक्रिया :—

चद (चर्य) आद (आर्य) पद (पर्य) शौद (शौर्य)

शाद (आर्या) धैद (धैर्य) पदुपासते (पर्युपासते)

निदोग: (निर्योग:) पदाय (पर्याय) पदाकुल (पर्याकुल)

पदङ्क (पर्यङ्क) पदट (पर्यटन Roam) पदाप्त (पर्याप्त)

धौदम (धौर्यम्) (TROT) मदादा (मर्यादा) सौद (सौर्य)

धाद (धार्य /Bearable/) मदक: (मर्यक:) धुदता (धुर्यता Leadership)

कालवीद (कालवीर्य) निदाण (निर्याण) (हाथी के ओंकड़ होना) निदातन

(निर्यातन) निदूह (निर्यूह) सूद (सूर्य) पूद (पूर्य)

नियम-संख्या (3)

शारदा - लिपि की प्रकृति में उक्त
की भांति - हलन्त /र/ के पक्ष में /व/ वर्ण
आता है, जो एक नये आकार का संयुक्त-अक्षर
उभर कर आता है। यथा :- /र+व/ = र्व (र्व)

निम्नलिखित उदाहरण :—

(अ) सर्व > सर्व (सर्व) [सर्‌व > सर्व]

(आ) गर्व > गर्व (गर्व) [गर्‌व > गर्व]

सामान्य बोध के लिये अभ्यास-प्रक्रिया :—

गर्वितः (गर्वित) वार्तिक (वार्तिक) चर्वित (चर्वित)

तूर्व (तूर्व) धूर्व (धूर्व) तुर्विक (तुर्विक) दुर्वक (दुर्व…

निर्वाह (निर्वाह) निर्वाण (निर्वाण) निर्वेद (निर्वेद)

दर्वित (दर्वित) दर्व (दर्व) निर्वासित (निर्वासित)

निर्वाचितं (निर्वाचितं) पूर्वाभ्यास (पूर्वाभ्यास) दर्वन (दर्व…

दर्वि (दर्वि) दुर्व (दुर्व) शर्व (शर्व) शर्वरी (शर्वरी)

सर्व (सर्व) बर्बरीक (बर्बरीक) चतुर्वर्ग (चतुर्वर्ग)

चातुर्वर्ण्य (चातुर्वर्ण्य) चतुर्विंश (चतुर्विंश) दुर्वज (दुर्वज)

(सौवीर) (गर्भ) (निर्वाण)

(सर्व) (सर्वत्र) (सर्वदा) (सर्वाणि)

विशेष-सूचना :—
(विशेष-सूचना)

नियम-संख्या (4) (शारदा-लिपि की प्रकृति में जब भी अग्र-हलन्त /र/ वर्णों के पृष्ठ में /ख, ग, च, ज, ध, श/ इन छः वर्णों में से कोई भी वर्ण आता है, तो हलन्त /र/ वर्ण शारदा-लिपि में लिखा नहीं जाता है। केवल इस स्थान को रिक्त अथवा खाली रखा जाता है):—

विश्लेषित उदाहरण :—
(विश्लेषित उदाहरण)

I. ख (ख) अर्/ख → अ ख (अर्ख)

II. ग (ग) अर्/ग → अ ग (अर्ग)

III. च (च) अर्/च → अ च (अर्च)

IV. ज (ज) ज(ज) अर्/ज → अ ज (अर्ज)
माजर (मार्जार)

V. ध (ध) अर्/ध → अ ध (अर्ध)

VI. श (श) अर्/श → अ श (अर्श)

(क) [illegible] :—
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास – प्रक्रिया)

/ [illegible] / (र्+ख)

[illegible] (सर्खे) [illegible] (गर्खे) [illegible] (लार्खे) [illegible] (अर्खित

[illegible] (विरखीति) [illegible] (लरखीति) [illegible] (मरखीति)

[illegible] : (वरखिट:) [illegible] (चरखिट) [illegible] (तर्खे)

/ [illegible] / (र्+ग)

(ख) [illegible] (सर्गी) [illegible] (मर्गी) [illegible] (गर्गिरि) [illegible] (कर्गी);

[illegible] (दुर्गी) [illegible] (दुर्गीति) [illegible] (दुर्गादेवी)

[illegible] (वर्गी) [illegible] (मर्गी) [illegible] (सार्गिति)

[illegible] (निर्ग्रथ) [illegible] (मार्गी) [illegible] (निर्गुण्डी)

(ग) / [illegible] / (र्+च)

[illegible] (कर्चूर) [illegible] (अर्चिना) [illegible] -
(कर्चिका) [illegible] (चर्चा) [illegible] (वर्चा) [illegible] (जर्चा)

[illegible] (धुर्चा) [illegible] (पर्चा) [illegible] (चर्चिका)

20 20

(ਘ) ਮੂਛ੍ਰਿਕ (मूर्छिका) ਠਛ੍ਰ (मर्छ) ਸਾਛ੍ਰਰ (शार्छर)

/ਰ+ਜ/ (र्+ज)

ਅਜ੍ਰੁਨ (अर्जुन) ਅਜ੍ਰਿਤ (अर्जित) ਮਾਜ੍ਰਨ (मार्जन)

ਆਜ੍ਰਵ (आर्जव) ਮਾਜ੍ਰਾਰ (मार्जार) ਵਜ੍ਰਨੀਯਮ (वर्जनीयम्

ਤਜ੍ਰਨਾ (तर्जना) ਗਜ੍ਰਨਮ (गर्जनम्) ਜਜ੍ਰਰ (जर्जर,

ਦੁਜ੍ਰਨ (दुर्जन) ਤੁਜ੍ਰਾ (तुर्जा) ਵਜ੍ਰਕ (वर्जक)

ਵਜ੍ਰ (वर्ज) ਵਜ੍ਰਿਤ (वर्जित) ਵਜ੍ਰਨਾ (वर्जना)

(ਙ) /ਰ+ਧ/ (र्+ध)

ਅਧ੍ਰ (अर्ध) ਅਧ੍ਰਹ (अर्धः) ਅਧ੍ਰੁਕ (अर्धुक)

ਅਧ੍ਰਚੰਦ੍ਰ (अर्धचन्द्र) ਊਧ੍ਰ੍ਵਕਾਂਡ (ऊर्ध्वकाण्ड)

ਊਧ੍ਰ੍ਵ (ऊर्ध्व) ਊਧ੍ਰ੍ਵਬਾਹੁ (ऊर्ध्वबाहु) ਊਧ੍ਰ੍ਵਪੁੰਡ੍ਰ -

(ऊर्ध्वपुण्ड्र) ਊਧ੍ਰ੍ਵਰੇਖਾ (ऊर्ध्वरेखा)

(ਚ) /ਰ+ਸ਼/ (र्+श)

ਦਾਸ਼੍ਰ (दार्श) ਦਸ਼੍ਰਨ (दर्शन) ਦਾਸ਼੍ਰਨਿਕ (दार्शनिक

ਪਾਸ਼੍ਰੁਕ (पार्शुक) ਪਾਸ਼੍ਰ੍ਵਿਕ (पार्श्विक) ਅਸ਼੍ਰ (अर्श)

ਕਸ਼੍ਰਨ (कर्शन) ਮਸ਼੍ਰਨ (मर्शन) ਦਸ਼੍ਰਨੀਯ (दर्शनीय)

ਵਿਕਸ਼੍ਰ (विकर्श) ਦਸ਼੍ਰਕ (दर्शक) ਅਧ੍ਰਕਸ਼੍ਰੰ (अर्धकर्शं)

[illegible]

(अदर्शन का पुनः आरम्भ

[illegible]

1. (ख) > (अर्ख) 2. (ग) > वर्ग ; 3. (घ) > अर्घ)

[illegible]

4. (ज) > पङ्ज ; 5. (ध) > अर्ध, 6. (श) > विमर्श

[illegible]

[illegible]

अक्षर - सूचना :—

[illegible]

शारदा- लिपि की लेखन प्रकृति में मध्यस्थ

[illegible]

हलन्त /र/ वर्ण प्रायः अग्रिम वर्ण के आरम्भ के

[illegible]

शीर्षस्थ पर अंकित होता है। वर्णों की गणना

[illegible]

इस प्रकार से है :—

[illegible]

(क, घ, छ, ट, ठ, ड, ढ, त, द, प, फ, ब,

[illegible]

भ, म, ल, ष, स, ह, (18)

→ अर्कृ > गर्कृ

[illegible]

(अर्क, दीर्घ, कार्छ्, अर्ट, मर्ट, आर्ड, दर्ढ,

[illegible]

अर्थ, हर्दि, अर्फ, अर्ब, गर्भ, कूर्म,

[illegible]

कैलिर्ङ्ग, हर्ष, कर्म,

नियम-संख्या (6) (शारदा-लिपि की प्रकृति में जब भी
अग्र-हलन्त /र/ के पक्ष में /थ/ वर्ण आता
है, तो एक नये ओंकार का संयुक्त-व्यञ्जन
उभर कर आता है। यथा:- /र्+थ/ = /र्थ/ (र्थ)

(निम्नलिखित उदाहरण)

(पार्थ) (स्वार्थ) (अर्थ) (तीर्थ)

(तीर्थंकर) (प्रार्थना)

(कार्यार्थम्) (समर्थ) (अर्थ)

(संज्ञार्थम्) (लिङ्गार्थ)

(पुरुषार्थ) (कार्यार्थ) (स्वार्थ)

(अर्थात्) (अर्थे) (अर्थाय)

नियम-संख्या (7)

(शारदा - लिपि की प्रकृति में जब
भी अग्र-हलन्त /स्/ वर्ण के पक्ष में /थ/ वर्ण —
आता है, तो एक नया संयुक्त - व्यञ्जन /स्थ/ —
उभर कर आता है। परं उच्चारण यथास्थित —
होकर बना रहता है)

(निम्नलिखित - उदाहरण)

[illegible] (स्थान) [illegible] (आस्था) [illegible] (स्थावर)

[illegible] (स्थापय) [illegible] (अवस्था) [illegible] (संस्थापित)

[illegible] (विस्थापित) [illegible] (स्थानाधीश)

[illegible] (उपस्थान) [illegible] (स्थैर्य) {स्+थ=द}

[illegible] (स्थानेश्वर) [illegible] (प्रस्थान)

[illegible] (अस्वस्थ) [illegible] (स्थिति)

[illegible] (स्थूल) [illegible] (उपस्थ)

नियम-संख्या ④

[illegible] :-

[illegible]
(शारदा लिपि में जब भी (ह) —

[illegible]
वर्ण के अन्त में हलन्त (त्, न्, र्) का

[illegible]
आगमन होता है तो एक नये आकार का

[illegible]
संयुक्त - रूप उभर कर आता है।)

[illegible] :-

ਅਸ੍ਵਤ੍ਥ: (अश्वत्थ) ਅਸ੍ਵਤ੍ਥਕ (अश्वत्थक)

ਅਸ੍ਵਤ੍ਥਾਨ੍ (अश्वत्थान्) ਅਸ੍ਵਤ੍ਥਾ (अश्वत्था)

ਅਸ੍ਵਤ੍ਥਿਲ (अश्वत्थिल) ਅਸ੍ਵਤ੍ਥ (अश्वत्थ)

ਹਲੰਤ /ਥ/ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ:—
(हलन्त (थ्) का प्रयोग)

ਕਥਾ (कथा) ਦਿਵ੍ਯ-ਕਥਾ (दिव्य-कथा)

ਸੁਕਥਾ (सुकथा) ਮਲਿਨ ਕਥਾ (मलिन कथा)

ਗ੍ਰਨ੍ਥ (ग्रन्थ) ਗ੍ਰਨ੍ਥਨਮ੍ (ग्रथनम्)

ਧਰ੍ਮਗ੍ਰਨ੍ਥ (धर्मग्रन्थ) ਗ੍ਰਥਿਲ (ग्रथिल)

ਮਥਰ (मथर) ਮਥਿਨ (मथिन)

"ਨਿਯਮ- ਸੰਖ੍ਯਾ 6 ਮੇਂ ਪ੍ਰਯੁਕ੍ਤ: ਰਫ਼ਾਂਤ

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ:- ਹਲੰਤ /ਰ/ ਉਪਰ ਪੈਰ ਕੇ /ਥ/ ਕਾ ਵਿਕਾਰ ... 22 ਪਰ ਪ੍ਰਯੁਕ੍ਤ: ਹੀ ਹੁਸ[illegible] ਹੈ ਯਥਾ:—

ਰ + ਥ = ਪਾਰ੍ਥ (पार्थ)
ਸਾਰ੍ਥ (सार्थ)

[illegible] (मथ) [illegible] (समुद्र-मथने)

[illegible] (मथना) [illegible] (आत्ममथन)

[illegible]
(प्रस्तुत प्रयास में यह कहना आवश्यक
[illegible]
बनता है कि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि के उपरान्त
[illegible]
शारदा लिपि का स्थान लिपि-विकास में प्राचीनतम
[illegible] —
प्रतिष्ठित रहा है। उत्तरोत्तर काल-खण्डों में
[illegible]
संस्कार और संशोधन सही-दिशा में न होने के कारण
[illegible]
जटिलता का आना स्वाभाविक हुआ है। अतः
[illegible] -
जटिलता का स्वरूप प्रस्तुत करना आवश्यक
[illegible]
बनता है। अन्यथा शारदा लिपि सीखने वाला व्यक्ति
[illegible]
विभ्रान्त भी हो सकता है)

(क)

"/[illegible] + [illegible]/ = /[illegible]/"

द्रुपद

[illegible] (गोपेन्द्र) [illegible] (द्रोण) [illegible] (द्रुपद

[illegible] (द्रुम) [illegible] (भद्र) [illegible] (द्रावे)

ਦ੍ਰੋਹ (द्रोह) ਸ਼ੂਦ੍ਰ (शूद्र) ਦ੍ਰਵ੍ਯ (द्रव्य)

ਸੌਭਦ੍ਰ (सौभद्र) ਸੁਰੇਂਦ੍ਰ (सुरेन्द्र) ਮਦ੍ਰ (मन्द्र)

ਮਗੇਂਦ੍ਰ (मृगेन्द्र) ਤਲੇਂਦ੍ਰ (तल्लेन्द्र) ਕੇਂਦ੍ਰ (केन्द्र)

(ਖ) "/ਦ + ਧ/ = /ਦ੍ਧ/
(द + ध) = (द्ध)

ਸਮਦ੍ਧ (समृद्ध) ਬੁਦ੍ਧਿ (बुद्धि) ਸ਼ੁਦ੍ਧਿ (शुद्धि)

ਵਦ੍ਧਿ (वृद्धि) ਸੰਸਿਦ੍ਧੈ (संसिद्धै) ਯੋਦ੍ਧਾ (योद्धा)

ਯੋਦ੍ਧਤਵ੍ਯਮ (योद्धव्यम्) ਸ਼੍ਰਦ੍ਧਾ (श्रद्धा) ਵਦ੍ਧਨਾ

(वर्द्धन) ਤਲਬਦ੍ਧ: (तलबद्धः) ਸਿਦ੍ਧਪਕਧ:

(सिद्धपक्षः) ਸਿਦ੍ਧਾਰ੍ਥ (सिद्धार्थ) ਸਿਦ੍ਧਿ (सिद्धि)

(ਗ) /ਸ਼ + ਟ/ = /ਸ਼੍ਟ/ (ष्+ट)

ਵਿਸ਼ਿਸ਼੍ਟ (विशिष्ट) ਸਸ਼੍ਟਿ (सृष्टि) ਦ੍ਰਸ਼੍ਟਿ (दृष्टि)

ਕਸ਼੍ਟਿ (कृष्टि) ਵਸ਼੍ਟਿ (वृष्टि) ਹਸ਼੍ਟਿ (हृष्टि)

ਪੁਸ਼੍ਟਿ (पुष्टि) ਹਸ਼੍ਟ (हृष्ट) ਧਨਿਸ਼੍ਟਾ (धनिष्ठा)

कनिष्ठा (कनिष्ठा) श्रेष्ठ (श्रेष्ठ) ज्येष्ठ (ज्येष्ठ)

द्रेष्ठ (द्रेष्ठ) पुष्ठ (पुष्ठ) सुष्ठि (सुष्ठि)

शारदा लिपि के संयुक्त-व्यञ्जन -
(शारदा लिपि के संयुक्त-व्यञ्जन -

परिवार का परिचय :—
परिवार का परिचय)

/क/

क्क (क्क), क्ख (क्ख), क्ङ (क्ङ), क्च (क्च),

(क्ल) क्ण (क्ण), क्त (क्त), क्त्य (क्त्य), क्त्र (क्त्र

क्त्र्य (क्त्र्य), क्त्व (क्त्व), क्थ (क्थ) क्थ्य (क्थ्य

क्न (क्न), क्न्य (क्न्य), क्प (क्प), क्म (क्म)

क्य (क्य), क्र (क्र) क्र्य (क्र्य), क्ल (क्ल)

क्व (क्व) क्व्य (क्व्य)

/क्ष/

क्ष्ण (क्ष्ण), क्ष्म (क्ष्म), क्ष्य (क्ष्य)

/ख/

ख्य (ख्य), ख्र (ख्र), प्रख्यात (प्रख्यात)

विख्यात (विख्यात), ख्याति (ख्याति)

/ग/

ग्ण (ग्ण), ग्द (ग्द) ग्ध (ग्ध) ग्न (ग्न)

ग्ब (ग्ब), ग्भ (ग्भ) ग्य (ग्य) ग्यु (ग्यु)

ग्व (ग्व) ग्ला (ग्ला) ग्रय (ग्रय)

/घ/

घ्न (घ्न), घ्नय (घ्नय) घ्म (घ्म) घ्य (घ्य)

घ्र (घ्र) घ्रु (घ्रु) घ्रू (घ्रू) घो (घो)

/ङ/

ङ्क (ङ्क), ङ्क्त (ङ्क्त) ङ्क्य (ङ्क्य) ङ्क्तौ (ङ्क्तौ)

ङ्ख्य (ङ्ख्य), ङ्ख (ङ्ख) ङ्ग्य (ङ्ग्य) ङ्ग (ङ्ग)

ङ्घ्य (ङ्घ्य), ङ्म (ङ्म), ङ्घ्र (ङ्घ्र) ङ्घ्रा (ङ्घ्रा)

/च/

च्च (च्च), च्छ (च्छ) च्छ्र (च्छ्र) च्म (च्म)

च्र (च्र) च्व (च्व) च्छा (च्छा) च्य (च्य)

/छ/

छ (छ) छिन्न (छिन्न) छ्र (छ्र) छ्य (छ्य)

"ज / + / ञ" / + / ज्ञ / (ज + ञा)

ज्ञा (ज्ञा), ज्ञ (ज्ञ), ज्म (ज्म), ज्ज

(ज्ज) ज्य (ज्य), ज्व (ज्व) एवं ज्वला (ज्वाला)

[illegible] (ज्ञ) "[illegible]" > [illegible] (ज्ञा) [illegible] (ज्ञय) [illegible] -
(ज्ञय) :– (आश्रीकरण)
(क) [illegible] (यज्ञ (ख) [illegible] (आज्ञा)

/[illegible]/ [illegible] (क्र) [illegible] (क्म) यथा:- [illegible] (क्रि

/[illegible]/ [illegible] (ट्र) [illegible] (ट्ठ) [illegible] (ट्य) [illegible] (टय
[illegible] (टि) [illegible] (टु) [illegible] (टू) [illegible] [illegible] (टा

/[illegible]/ [illegible] (ठा) [illegible] (ठे) [illegible] (ठि) [illegible] (ठु) [illegible] (ठ्य

/[illegible]/ [illegible] (ड्र) [illegible] (ड्म) [illegible] (ड्व) [illegible] (ड्र)
[illegible] (ड्र) [illegible] (ड्ड) [illegible] (ड्ड) [illegible] (ड्म)

/[illegible]/ [illegible] (ढा) [illegible] (ढु) [illegible] (ढ्य) [illegible] (ढ्र)
[illegible] (ढो) [illegible] (ढौ) [illegible] [illegible] (ढुण्ढ)

/ण/

[illegible] (ण्ट), [illegible] (ण्ठ), [illegible] (ण्ड्य) [illegible] (ण्ड)

[illegible] (ण्ड्र) [illegible] (ण्ढ) [illegible] (ण्ण) [illegible] (णो)

[illegible] (णौ) [illegible] (ण्म) [illegible] (ण्य) [illegible] (ण्व)

/त/

[illegible] (त्क) [illegible] (त्क्र) [illegible] (त्त) [illegible] (त्त्र)

[illegible] (त्त्य) [illegible] (त्त्व) [illegible] (त्थ) [illegible] (त्न)

[illegible] (त्न्य) [illegible] (त्स्त्य) [illegible] (त्प) [illegible] (त्प्र)

[illegible] (त्म) [illegible] (त्म्य) [illegible] (त्य) [illegible] (त्व)

[illegible] (त्स) [illegible] (त्स्न) [illegible] (त्स्न्य) [illegible] (त्स्य)

[illegible] (थ्न) [illegible] (थ्य) [illegible] (त्र) [illegible] (त्रि)

/द/

[illegible] (द्ग), [illegible] (द्द) [illegible] (द्ध) [illegible] (द्ध्य)

[illegible] (द्न्य) [illegible] (द्ब) [illegible] (द्भ) [illegible] (द्भ्र)

[illegible] (द्य), [illegible] (द्र) [illegible] (द्व)

/ध/

[illegible] (ध्न) [illegible] (ध्न्य), [illegible] (ध्म) [illegible] (ध्य)

पू(ष्प) पू(ग्र) पू(ह्व)

/न/

क(न्क) त(न्त) त्य(न्त्य) त्र(न्त्र)

थ(न्थ) द्र(न्द्र) न(न्न) प(न्प)

ब्र(न्ब्र) फ(न्फ) म(न्म) त्र(न्त्र)

स(न्स) स्र(न्स्र) नज़न(नज़न)

~~क~~ द्रभ(कन्दर्भ), सद्रभ(सन्दर्भ)

/प/

प्र(प्र) प्य(प्त्य) प(प्र) प्व(प्व) पम(प्म)

प्य(प्य) प्र(प्र) प(प्ल) प्व(प्व) प्स(प्स)

प्स्व(प्स्व) पा(पा) पी(पी) प्लुत(प्लुत)

/फ/

स्फर(स्फार) स्फट(स्फट) स्फ(स्फ)

स्फरण(स्फरण) स्फुटी(स्फुटी)

स्फीत(स्फीत) स्फूर्जक(स्फूर्जक)

/व/

व्य(व्ध) व्ज(व्ज) व्र(व्ट) व्र(व्ध)

[illegible] (ब्ब) [illegible] (ब्भ) [illegible] (ब्भ्य) [illegible] (ब्य)
[illegible] (ब्र) [illegible] (ब्ब्र)

/भ/
[illegible] (भ्र) [illegible] (भ्य) [illegible] (भ्र) [illegible] (भ्व)
[illegible] (भु) [illegible] (अभ्याह) [illegible] (भ्ह)

/म/
[illegible] (म्न) [illegible] (म्प) [illegible] (म्ब) [illegible] (म्ब)
[illegible] (म्ब्य) [illegible] (म्म) [illegible] (म्म) [illegible] (म्य)
[illegible] (म्र) [illegible] (म्ब्र) [illegible] (म्व) [illegible] (म्ह)
[illegible] (म्प) > म्+प;

/य/
[illegible] (य्य) [illegible] (य्व)

/र/ [illegible] (र् हलन्त)

[illegible] (र्क), [illegible] (र्ख), [illegible] (र्ग) [illegible] (र्घ)
[illegible] (र्च) [illegible] (र्छ) [illegible] (र्ज) [illegible] (र्ट) [illegible] (र्ठ)

र्ड (र्डं) र्ढ (र्डि) र्ण (र्णि) र्त (र्ति) र्थ (र्थि)
र्द (र्दि) र्ध (र्धि) र्ध (र्धि) र्फ (र्फि) र्ब (र्बि)
र्भ (र्भि) र्म (र्मि) र्य (र्यि) र्ल (र्लि च (र्वि)
र्श (र्शि) र्ष (र्षि) र्स (र्सि) र्ह (र्हि)

/ल/

ल्प ल्म
(ल्क) (ल्प) ल्फ (ल्फ) (ल्म)
ल्य (ल्य) ल्र (ल्र) ल्ल (ल्ल) ल्व (ल्व)

/व/

व्य (व्य) व्र (व्र) व्व (व्व) वा (वा)
वि (वि) व्व (व्व)

/स/

स्त्र (स्त्र) स्त्य (स्त्य) स्र (स्र) स्य (स्य)
स्र (स्र) स्त्र (स्त्र) स्त्र (स्त्रै) स्थ (स्थ)
स्व (स्व) श्श (शश)

/ध/

धं (एवं पाण्डुलिपि-प्रयुक्त प्रयोग > ध्र) (ह्व)

(A) ▸ ष्ट्य (ष्ट्य) ष्ट्र (ष्ट्र) ष्ट्र्य (ष्ट्र्य) ष्ट्व (ष्ट्व)

(B) ▸ ष्ठ्य (ष्ठ्य) ष्ठ्र (ष्ठ्र) ष्ठ्र्य (ष्ठ्र्य) ष्ठ्व (ष्ठ्व)
ष्ठ (ष्ठ) ष्ठा (ष्ठा) ष्ण (ष्ण) ष्ण्य (ष्ण्य)

ष्प (ष्प) ष्प्य (ष्प्य) ( ) ष्फ (ष्फ)

ष्म (ष्म) ष्व (ष्व)

/स/

स्क (स्क) स्ख (स्ख) स्त (स्त) स्त्य (स्त्य)
स्म (स्म) स्म्य (स्म्य), स्य (स्य) स्र-
(स्र) स्त्व (स्त्व) स्थ (स्थ), स्न (स्न)

स्न्य (स्न्य) स्प (स्प) स्फ (स्फ)
स्म (स्म) स्म्य ( ) स्य (स्य)
स्र (स्र) स्व (स्व) स्स (स्स) स्ह (स्ह)
(स्व) (स्व)

/ह/

ह्ण (ह्ण) ह्न (ह्न) ह्म (ह्म) ह्य (ह्य)
ह्र (ह्र) ह्ल (ह्ल) ह्व (ह्व)

(अग्रिम अध्याय - प्रक्रिया के स्थायी
स्तम्भ के रूप में अपनाकर, इस प्रस्तुत प्रयास
में पुनः शारदा वर्णवर्तिनी के क्रमिक-प्रयोग
को परखने का एक और प्रयास किया जा रहा
है। यह प्रयास चाक्षुष - बिम्ब की ग्राह्य शक्ति के
लिए आवश्यक है :

(अकस्मात्), (अग्रतः) (अजस्रम्) (अज्ञान) (अग्रे), (अथ)
(अत्र) (अद्ध) (अद्भुत) (अध्यात्म विद्या) (अस्मिन्)
(अब्ज) (अद्य) (अधः) (अधस्तात्) (अन्यत्र) (अर्घ्य) (अद्रि)
(अङ्कुर) (अङ्गना) (अङ्गुल)
(अचिन्त्य) (अजमोद) [अजवन]
(अजातशत्रु) "अधर" —
(अज्ञात) (अज्ञातकुलशील)

[illegible] (अज्येष्ठ) [illegible] (अज्र) [क्षेत्र, मैदान] [illegible] (अजा) [illegible] (अटवी) [illegible] (अटल) अ०,

अ०ति (जाना, जाता है) [illegible] (उद्यम करना, उद्यम करता है) [illegible] (ढक्का) (विशाल पाव...)

[illegible] (ढक्कान) [...] [illegible] (ढक्कारी) [भगवती तारा]

[illegible] (अणव्य) [छोटी खेती] [illegible] (अणीयस्) [सूक्ष्म]

[illegible] (अण्डाकार) [illegible] (अण्डज) [illegible] (अणी)

[illegible] (अतर्क) [illegible] (अतर्क्य) [illegible] (अतिकाच्छ्र) [अतिकठिन] [illegible] अथवा [illegible] (अतितीक्ष्ण या तीक्ष्ण), [illegible] (अत्र) [illegible] (अथवा)

[illegible] - [र+व = व, शारदा > र + व = व (र्व)] - (अर्थवत्) [illegible], (अर्थो) [illegible] (अदर्शन) [श वर्ण की उपस्थिति होने पर हलन्त /र/ लिखा नहीं जाता, मात्र रिक्त स्थान रखा जाता है] [illegible] (अदीर्घ) [illegible] (अदंष्ट्र) दन्तहीन

[illegible] (अद्धा) > सत्यता, [illegible] (अद्भुत) [illegible] (अद्यानि:)

[illegible] (अधर्म) [illegible] (अधिकार) [illegible] (अध्याय)

ਅਧਿਕੜ (अधिकृत) [यह स्थिति इसका होना चाहिए था] > ਅਧਿਕ੍ਰ

पर पाण्डुलिपियों में बहु प्रचलित रूप ਕ੍ਰ (कृ) ही मिलता है।

ਅਵੈਧ (अवैध) ਅਧ੍ਵਰ੍ਯੁ (अध्वर्यु) [र+य = द (र्य)]

ਅਨਕ੍ਸ਼ਰ: (न अक्षर कोऽयं / अनक्षर:) ਅਨਵਿਦਗ੍ਧ (अनविदग्ध)

ਅਨਡ੍ਵਾ (अनड्वा) ਅਨਨ੍ਯਪੂਰ੍ਵ [र+व > च (र्व)]

(अनन्यपूर्व) ਅਨਪੇਕ੍ਸ਼ (अनपेक्ष) ਅਨਮ੍ਰ (अनम्र)

ਅਨਘ (अनघ) ਅਨ੍ਯਾਯ (अन्याय) ਅਨੁਵ੍ਰਿਤ੍ਤਿ (अनुवृत्ति)

ਅਨ੍ਨਜਲ੍ਪਮ੍ (अन्नजल्पम्), ਅਪਰਪਕ੍ਸ਼ (अपरपक्ष)

ਅਪਾਕ (अपाक) ਅਵਿਦ੍ਯਾ (अविद्या) ਅਪੀਵ੍ਯ:

(अपीव्य - अतिसुन्दर) ਅਪੁਸ਼੍ਪਕਾਲ (अपुष्पकाल) ਅਪੂਰ੍ਵ

(अपूर्व) [र+व, परिवर्तित रूप > च] ਅਪੇਕ੍ਸ਼ਾ (अपेक्षा)

ਅਪੋਢ (अपोढ / कथित) ਅਪ੍ਰਕਾਸ਼ (अप्रकाश) ਕ੍ਸ਼ਤਿ (क्षति)

ਅਫੇਨ (अफेन) ਅਫਲ (अफल) ਅਬਾਧ -

(अबाध) ਅਬਲ (अबल) ਅਬ੍ਜ (अब्ज) ਅਬ੍ਦ

'या' ਅਬ੍ਦ (अब्द) ਆਬ੍ਰਹ੍ਮਣ੍ਯ (आब्रह्मण्य)

ਅਭ੍ਰਕ (अभ्रक) ਅਭਿਮਨ੍ਯੁ (अभिमन्यु) ਅਠਰ-

([illegible])

ਅਭਿਬ੍ਯਾਪ੍ਤਿ (अभिव्याप्ति) ਅਭੀਸ਼੍ਟ (अभीष्ट) ਅਭੀਕ
(अभीक) ਅਭ੍ਯਰ੍ਥ (अभ्यर्थ) ਅਭ੍ਯੁਤ੍ਥਾਨ (अभ्युत्थान)
ਅਮਤ (अमत) ਅਮਰਾ (अमरा) ਅਮਾਵਸ੍ਯਾ (अमावस्या)
ਅਮਾਤ (अमूल) ਅਮੂਰ੍ਤ (अमूर्त) ਅਮਿਤ੍ਰ (अमित्र)
ਅਮੇਧਸ (अमेधस्) ਅਮੋਘ (अमोघ) ਅਮ੍ਬਰ (अम्बर)
ਅਮ੍ਬਾ (अम्बा) ਅਮ੍ਬੁਧਿ (अम्बुधि) ਅਮ੍ਭਸ (अम्भस्)
ਅਮ੍ਭੋਧਰ (अम्भोधर) ਅਮ੍ਰ (अम्र) ਅਮ੍ਲ (अम्ल)
ਅਯਸ (अयस्) ਅਯਾਚਿਤ (अयाचित) ਅਯਿ (अयि)
ਅਯੇ (अये) ਅਯੋਧ੍ਯਾ (अयोध्या) ਅਰਣ੍ਯ (अरण्य)
ਅਰਾਜਕ (अराजक) ਅਰਿਸ਼੍ਟ (अरिष्ट) ਅਰੁਣ
(अरुण) ਅਰੇਪਸ (अरेपस्) ਅਰ੍ਗਲ (अर्गल)

[/ग/ की उपस्थिति में हलन्त /र/ लिखा नहीं जाता परं रिक्त स्थान रखा जाता है पर क्रम "ख, ग, घ, ज, ध, म", यथा:—

I. ਗ (र्ख), II. ਗ (र्ग), III. ਘ (र्घ), IV. ਜ (र्ज), ਧ - (र्ध), ਮ (र्म)

ਅਲਸ (अलस्) ਅਲਕ (अलक) ਅਲਾਬੁ (अलाबु)

ਅਲਿਪਤਾ (अलिप्ता) ਅਵਕਾਸ਼ (अवकाश) ਅਵਟ
(अवट) (मदारी) ਅਵਛੇਦਕ (अवच्छेदक) ਅਵਤੀਰਣ (अवतीर्ण,
ਅਵਰੁਧ (अवरुद्ध) ਅਵਿਦਿਆ (अविद्या) ਅਵਿਸਪਸ਼ਟ
(अविस्पष्ट) ਅਵੀਚਿ (अवीचि) ਅਵਿਅਕਤ (अव्यक्त) ਅਸ਼ਨ
(अशन) ਅਸ਼ਾਸਤ੍ਰ (अशास्त्र) ਅਸ਼ਿਤ (अशित) ਅਸ਼ੋਧ੍ਯ.
अशोध्य) ਅਸ਼ਮਕ (अश्मक) ਅਸ਼ਮਗਰਭ (अश्मगर्भ)
ਅਸ਼੍ਰ (अश्र) ਅਸ਼੍ਰਾਂਤ (अश्रान्त) ਅਸ਼੍ਰਿ (अश्रि)
ਅਸ਼੍ਰੁ (अश्रु) ਅਸ਼ਲੀਲ (अश्लील) ਅਸ਼੍ਵਖੁਰ —
(अश्वखुर) ਅਸ਼੍ਵੱਥ (अश्वत्थ) ਅਸ਼੍ਵਿਨੀਕੁਮਾਰ (अश्विनीकुमा
ਅਸ਼ਾਢ (अषाढ) ਅਸ਼ਟਕਾ (अष्टका) ਅਸ਼ਟਾਧਿਆਯੀ.
(अष्टाध्यायी) ਅਸ਼ਟਾਵਕ੍ਰ (अष्टावक्र) ਅਸੰਸਕ੍ਰਿਤ (
(असंस्कृत) ਅਸਾਧੁ (असाधु) ਅਸਿਪਤ੍ਰ (असिपत्र) (म्यान)
ਅਸੁਰ (असुर) ਅਸੂਯਕ (निंदक) (असूयक) ਅਸ੍ਰਿਗ (असृग्
ਅਸ੍ਰਿਕਪਾਤ: (असृक्पात:) [रक्त की धारा) ਅਸ੍ਮਿ (अस्मि
ਅਸ੍ਮਿਤ (अस्मित) ਅਸ੍ਰਾਮ (अस्राम) ਅਹੰਕਾਰ
(अहंकार) ਅਹਿਫੇਨ (अहिफेन) [अफीम)

[illegible]
(संप्रति अधोलिखित प्रकार में शारदा लिपि के उन शब्दों को
[illegible]
उद्धृत करने का प्रयत्न किया जा रहा है, जो शब्द शारदा
[illegible]
लिपि के लिखने और आपसी तालमेल में अटिलता
[illegible]
प्रस्तुत करते है :)

[illegible] (संलापयेत्तिरण्यम्
[illegible] (अमृत), [illegible] (अध्यात्म) [illegible] (अन्न) [illegible] (अग्र)

[illegible] (अर्थ) [illegible] (अथ) [illegible] (अटवी) [illegible] (अष्ठ)

[illegible] (अर्जुन) [illegible] (अर्ध) [illegible] (अर्क) [illegible] (अर्शन)

[illegible] (अर्चना) [illegible] (अर्जन) [illegible] (अर्घ)

[illegible] (अश्वत्थ) [illegible] (अश्वत्थामा) [illegible] (अनाथ)

[illegible] (अर्थ) [illegible] (अमित्र) [illegible] (अन्तर) [illegible]

(अद्य) [illegible] (अतीव) [illegible] (अज्ञा) [illegible] (अन्यद्ध)

[illegible] (अमित:) [illegible] (अमुत्र) [illegible]

[illegible] (अनुचित) [illegible] (अरम्) [illegible] (अलं)

[illegible] (अध:) [illegible] (अवेद्यु:) [illegible] (अज्ञान्त:)

[illegible] (अन्यथा) [illegible] (अनिशम्) [illegible] (अमा)

[illegible], (ह्यस्-ह्यस्, ह्यो...)

𑆄𑆠𑇀𑆩𑆳 (आत्मा) 𑆄𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪 (आचार्य) 𑆄𑆠𑇀𑆩𑆱𑆩𑇀𑆨𑆳𑆮𑆴𑆠 (आत्मसं-भावित) 𑆄𑆤𑆤𑇀𑆢 (आनन्द) 𑆄𑆰𑆳𑆞 (आषाढ) 𑆄𑆯𑆕𑇀𑆑𑆳 (आशङ्का) 𑆄𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪 (आचार्य) 𑆄𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑 (आवश्यक) 𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆴𑆑 (नास्तिक) 𑆤𑆽𑆫𑆳𑆯𑇀𑆪𑆁 (नैराश्यं) 𑆮𑆴𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠 (विक्रान्त) 𑆄𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠 (आक्रान्त) 𑆥𑆫𑇀𑆪𑆶𑆥𑆳𑆱𑇀𑆠𑆼 (पर्युपास्ते) — 𑆄𑆢𑇀𑆪𑆩𑇀 (आद्यम्) 𑆑𑆳𑆟𑇀𑆝 (काण्ड) 𑆨𑆳𑆟𑇀𑆝 (भाण्ड) 𑆅𑆢𑆩𑇀 (इदम्) 𑆅𑆠𑆂 (इतः) 𑆅𑆠𑆱𑇀𑆠𑆠𑆂 (इतस्ततः) 𑆅𑆢𑆳𑆤𑆵𑆁 (इदानीं) 𑆅𑆖𑇀𑆗𑆳 (इच्छा) वस्तुतः 𑆮𑆴𑆑𑇀𑆫𑆩 (विक्रम) 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆠𑆴𑆑 (कार्तिक) 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆴 (प्रकृति) 𑆩𑆲𑆫𑇀𑆰𑆴 (महर्षि) 𑆓𑇀𑆫𑆡𑆴𑆠 (ग्रथिता) 𑆯𑆴𑆒𑆟𑇀𑆝𑆵 (शिखण्डी) 𑆥𑆴𑆠𑆹𑆤𑇀 (पितॄन्) 𑆑𑆳𑆕𑇀𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 (काङ्क्षित) [illegible] 𑆃𑆮𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠 (अवस्थित) 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳 (क्रिया) 𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑆴 (बुद्धि) 𑆘𑆵𑆫𑇀𑆟𑆳𑆤𑆴 (जीर्णानि) 𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑆴𑆪𑆾𑆓𑆁 (बुद्धियोगं) 𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑇀𑆪𑆳 (बुद्ध्या) 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆪𑆾𑆓 (निर्योग) 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆢𑇀𑆮𑆤𑇀𑆢𑇀𑆮 (निर्द्वन्द्व) 𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 (शान्ति) 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴𑆯𑇀𑆫𑆼𑆟𑆼𑆮 (व्यामिश्रेणेव) 𑆯𑆑𑇀𑆤𑆾𑆠𑆴 (शक्नोति) 𑆃𑆥𑆫𑆴𑆲𑆳𑆫𑇀𑆪𑆼 (अपरिहार्ये) 𑆮𑆴𑆔𑇀𑆤 (विघ्न) 𑆢𑇀𑆮𑆴𑆘 (द्विज)

ਈਂਖਤ (ईषत्) ਈਂਸ੍ਵਰ (ईश्वर) ਈਂਰਤਿ (इति) [illegible] ਨੀਮ (नीम)

ਦ੍ਰੌਪਦੀ (द्रौपदी) ਸਮੀਕ੍ਸ਼੍ਯ (समीक्ष्य) ਤੂਸ਼੍ਣੀ (तूष्णी)

ਜੀਰ੍ਣਾਨਿ (जीर्णानि) ਬ੍ਰਾਹ੍ਮਣੀ (ब्राह्मणी) ਗੀਤਾਸ਼ਾਸ੍ਤ੍ਰ (गीताशास्त्र)

ਵੀਰ੍ਯਵਾਨ (वीर्यवान) ਵੀਰਭੋਗ੍ਯਾਵਸੁਨ੍ਧਰਾ (वीरभोग्यावसुन्धरा)

ਦੀਰ੍ਘ (दीर्घ) ਸ਼੍ਰੀਹਨੁਮਾਨ (श्रीहनुमान्) ਕੀਰ੍ਤਨ (कीर्तन)

ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ (श्रीमान्) ਕ੍ਰੀੜਾ (क्रीडा) ਸ਼ੀਤੋਸ਼੍ਣ (शीतोष्ण)

ਸੁਰੀਨ੍ਦ੍ਰ (सुरीन्द्र) ਮਹਰ੍ਸ਼ੀਆਸ਼੍ਰਮ (महर्षीआश्रम)

ਬ੍ਰਹ੍ਮਰ੍ਸ਼ੀਆਸ਼੍ਰਮ (ब्रह्मर्षीआश्रम) ਵਿਕੀਰ੍ਣ (विकीर्ण)

ਪ੍ਰਕੀਰ੍ਤ੍ਯਾ (प्रकीर्त्या) ਉਤ੍ਤੀਰ੍ਯੋ (उत्तीर्यो) ਮੋਕ੍ਸ਼ (मोक्ष)

ਉਚ੍ਚੈ (उच्चै) ਉਤ੍ਤਰਦਿਸ਼ਾ (उत्तरदिशा) ਉਭਯਤ: (उभयतः)

[illegible]

ਉਸ਼ਾ (उषा) ਬਨ੍ਧੁ (बन्धु) ਬੁਦ੍ਧਿਮਾਨ (बुद्धिमान्)

ਪਸ਼ੁਪਾਸਤੇ (पशुपास्ते) ਇਨ੍ਦ੍ਰਿਯਾਰ੍ਥੇਸ਼ੁ (इन्द्रियार्थेषु)

ਤ੍ਰਿਪੁਰਾਤ੍ਮਨ: (त्रिपुरात्मनः) ਉਦ੍ਰੇਤ (उद्रेत)

ਸ਼੍ਰੁਤਵਤ (श्रुतवत्) ਸ਼ੀਤੋਸ਼੍ਣਸੁਖਦੁ:ਖੇਸ਼ੁ (शीतोष्णसुखदुःखेषु)

ਸਾਧੁਬੁਦ੍ਧਿ (साधुबुद्धि) ਸ਼ਤ੍ਰੁਸੰਸਾਰਵਰ੍ਤਨਿ (शत्रुसंसारवर्तनि)

(1) ਭੂਤਸ੍ਥ (2) ਭੂਤਸ੍ਥੋ (भूतस्थ भूतस्थो) ਭੂਤਾਨਿ (भूतानि)

(1+2 ये दोनो रूप पाण्डुलिपियों में मिलते हैं, — पर [illegible] रूप / ਭੂ / है।)

[illegible] (सर्वभूतेषु) [illegible] (भूतानामस्मि) —

[illegible] (धेनूनामस्मि) [illegible] (ऋतूनां कुसु-

माकरः) [illegible] (ऊर्जितम्) [illegible] (क्षपयाति)

[illegible] (अनेक, बाहूदरवक्त्रनेत्रं)

[illegible] (कनकन्) [illegible] (कूपवारि) [illegible] (सूर्योदय,

[illegible] (कूप) [illegible] (कूटस्थ) [illegible] (कूर्माचल)

[illegible] (ऊर्ध्व) [illegible] (क्रूर) [illegible] (शार्दूल) —

[illegible] (वधून) [illegible] (मधुसूदन) [illegible] (अंशुपूर्ण

[illegible] (अरिसूदन) [illegible] (त्रुटि) [illegible] (तूष्णीं)

[illegible] (भूत्वा), [illegible] (भूत्वा) [पाण्डुलिपियों में दोनों का प्रचलन है

[illegible] (इषु) [illegible] (धातृ) [illegible] (कर्तृ) [illegible] (नेतृ

[illegible] (भर्तृ) [illegible] (भ्रातृ) [illegible] (दुहितृ) [illegible] (कृता)

[illegible] (धातृन्) [illegible] (पितृन्) [illegible] (नप्तृन्)

[illegible] (एलका) [illegible] (एकान्त) [illegible] (एकस्)

[illegible] (केशव) [illegible] (विघाते) [illegible] -

(कर्मण्येवाधिकारः) [illegible] (हेतु) [illegible] (सर्वेषु) [illegible] (दूरेण)

[illegible] (दुष्कृते) [illegible] (निर्वेद) [illegible] (प्रभावेन)

[illegible] (व्रजेत) [illegible] (दुःखेषु) [illegible] (इन्द्रियार्थे)

[illegible] (यस्येन्द्रियाणि) [illegible] (रागद्वेष)

[illegible] (प्रकर्षोऽस्तुते) [illegible] (कार्यते)

[illegible] (प्रकृतिजैः) [illegible] (गुणैः) [illegible] (तैर्दत्तान्)

[illegible] (प्रदायैभ्यो) [illegible] (वैरिणम्) [illegible] -

(तांस्तथैव) [illegible] (कर्मैव) [illegible] (पूर्वैरपि) [illegible] (दैव)

[illegible] (यज्ञे तैनेवोपजुह्वति) [illegible] (सांख्यैः)

[illegible] (केवलैः) [illegible] (तैर्जितः) [illegible] (छिन्नद्वैधाः)

[illegible] (तस्यैव) [illegible] (आत्मैव) [illegible] (चैलाजिन)

[illegible] (तत्रैकाग्रम्) [illegible] (शनैः शनैः) –

[illegible] (त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः) [illegible] (तैः)

[illegible] (मयैव) [illegible] (सुखदुःख संज्ञैः)

[illegible] (योगिनस्तैलं) [illegible] (वेदेषु सर्वैः)

[illegible] ([illegible] (") [illegible] (ओक: 'ओरतन') [illegible] (ओघ:-ढेर)

[illegible] (ओत-बुनाई) [illegible] (ओक्य)(अक्षय?) [illegible] (ओष्ठम्)

[illegible] (ओज) [illegible] (कोटीर, ताज) [illegible] (ओदन Lake)

[illegible] (द्रोण) [illegible] (योत्स्यामि) [illegible] (भोगान्)

[illegible] (उभयो:) [illegible] (शङ्खलोऽयं) [illegible] (पुलको)

[illegible] (नरोऽपराणि) [illegible] (श्रोत्रियुम्)

[illegible] (हङ्कोऽस्तु) [illegible] (योगस्थ:) [illegible]-

(मोहकलिलं) [illegible] (मनोगतान्) [illegible]-

(कूर्मोऽङ्गानीव) [illegible] (बुद्धिनाशो) [illegible] (नियोजित:)

[illegible] (औघ) [illegible] [illegible] (औजसम्) [Gold]

[illegible] (औज्ज्वल्यम्) [उज्ज्वलता] [illegible]

(औदार्यम्) [उदारता] [illegible] (औपचारिक) [illegible]

(औपस्थान) [illegible] (रागद्वेष) [illegible] (परिपन्थिनौ)

[illegible] (व्यवस्थितौ) [illegible] (ब्रह्माणौ) [illegible]

(उभौ) [illegible] (सांख्ययोगौ) [illegible] (शुचौ) [illegible]-

(कौन्तेय) [illegible] (विभावसौ) [illegible] (कौमारं) [illegible] (यौवनं)

मावदा लिपि के लेखन प्रकार में मद्र-
(शारदा लिपि के लेखन प्रकार में शब्द-
मंयोजना, मद्र-खण्ड एवं वाक्य-खण्ड की जटिलता का -
संयोजना, शब्द-खण्ड एवं वाक्य-खण्ड की जटिलता का —
समाधान :—
समाधान)

अर्द्ध (अर्थ) असदित्सुम्ते (असदित्सुम्ते)

अश्लोष्वं (अश्लोष्वं) अव्ययम् (अव्ययम्)

अश्वत्थं (अश्वत्थं) अमृत (अमृत) अस्वाला (अस्वाला)

अत्यर्थितोऽस्मि (अत्यर्थितोऽस्मि) असंख्यात: (असंख्यात:)

अरुणी (अरुणी) अखण्ड (अखण्ड) अवस्थित (अवस्थित)

अश्व (अश्व) अपरिह्रार्थे (अपरिह्रार्थे) अव: (अव:)

अभ्युत्थानम् (अभ्युत्थानम्) अद्य (अद्य)

अन्तर (अन्तर) असङ्ग (असङ्ग)

आदित्यवत्ज्ञानम् (आदित्यवत्ज्ञानम्)

आनन्द (आनन्द) आधान (आधान) आन (अन्य)

आचार (आचार) गान्धार (गान्धार) विद्या-
(विद्या) आषाढ (आषाढ) पाराशर्य (पाराशर्य)

पाण्डव (पाण्डव) मृदा (मृदा) क्रिया (क्रिया)

उम्र (उष्ट्र) उठय (उभय) उषा (उषा)

कम्भक (कुम्भक) कुरक (कुरक) कुक्षुदा (क्षुदा)

खुर (खुर) गरु (गुरु) घुण (घुण) चुलुप- (चुलुपा) कुरण (कुरण) जुष्ट (जुष्ट)

तुलसी (तुलसी) थुत्कार (थुत्कार) दुधित- (दुधित) दुरीण (दुरीण) नुति (नुति)

कूजन (कूजन) गूढोत्तर — (गूढोत्तर) सूक्ष्म (सूक्ष्म) मूल (मूल) शूल (शूल) कूल (कूल) तूल (तूल) पूर्ण (पूर्ण) सूर्य (सूर्य) कूर्म (कूर्म) स्तूप (स्तूप) शून्य (शून्य) स्थूल - (स्थूल) सूक्ष्म (सूक्ष्म) भ्रूमध्ये (भ्रूमध्ये)

नव सूचना:—(क) शूल्य (शूल्य) (ख) शूल्य (शूल्य)

ओघ (ओघ) ओष्ठ (ओष्ठ) ओष्ठा (ओष्ठा) - ओघ (ओघ) ओषध (ओषध) कोप (कोप)

ਸੰਗ੍ਯਾ (संज्ञा) ਪੁਤ੍ਰਾਣਾਮ੍ (पुत्राणाम्)
ਵ੍ਰਿਕ੍ਸ਼ (वृक्ष) ਪਾਰ੍ਸ਼੍ਵ (पार्श्व) ਕੁਰ੍ਯਾਤ੍ (= (कुर्यात्) ਸੰਖ੍ਯਾ (संख्या) ਵਾਕ੍ਯਮ (वाक्यम्)
ਸ਼ੂਰ: (शूर:) ਪਰਾਮਰ੍ਸ਼ (परामर्श) ;

ਇਤਰ (इतर) ਇਸ਼ੁ (इषु)
ਇਸ਼੍ਟ (इष्ट) ਇੱਛਾ (इच्छा) ਇਡਾ (इडा)
ਇੰਦ੍ਰਿਯ (इन्द्रिय) ਇਕ੍ਸ਼ੁ (इक्षु) ਇਸ਼੍ਟ (इष्ट)
ਗਤਿ (गति) ਮਤਿ (मति) ਕ੍ਰਿਸ਼ਿ (कृषि) —
ਵ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (वृष्टि) ਨਿਯਤਿ (नियति) ਤਿਥਿ (तिथि)

ਈਰ (ईर) ਕੀਰ (कीर) ਨੀਰ (नीर)
ਈਤਿ (ईति) ਈਸ਼ਾ (ईषा) ਈਹਾ (ईहा)
ਈਸ਼ਤ (ईषत्) ਪੀਨਤਾ (पीनता) ਗੀਤਾ (गीता)
ਕੀਕਲ (कीकल) ਕੀਟ (कीट) ਨੀਚ (नीच)
ਭੀਸ਼ਣ (भीषण) ਮੀਨ (मीन) ਰੀਤਿ (रीति)

𑆑𑆾𑆬𑆳𑆲𑆬 (कोलाहल) 𑆠𑆾𑆑𑇀𑆰𑆟 (तोक्षण)
𑆓𑆾𑆬𑆳 (गोला) 𑆖𑆾𑆫 (चोर) 𑆗𑆾𑆫𑆟 (छोरण)
𑆓𑆾𑆢𑆵 (गोदी) 𑆣𑆾𑆫𑆟 (धोरण) 𑆠𑆾𑆫𑆟 (तोरण)
𑆔𑆾𑆰 (घोष) 𑆇𑆢𑇀𑆔𑆾𑆰 (उद्घोष) —
𑆘𑆾𑆰𑆳 (जोषा) 𑆑𑆾𑆯𑆴𑆑𑆳 (कोशिका)

𑆑𑆿𑆥𑆵𑆤 (कौपीन) 𑆐𑆢𑆳𑆫𑆴𑆑- (औदारिक) 𑆐𑆢𑇀𑆣𑆠𑇀𑆪 (औद्धत्य) 𑆐𑆥𑆩𑇀𑆪- (औपम्य) 𑆤𑆿𑆬 (नौल) 𑆑𑇀𑆰𑆿𑆫 (क्षौर) 𑆓𑆿𑆝𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 (गौडेश्वर) 𑆠𑆿𑆬𑆴𑆤𑇀 (तौलिन्) 𑆣𑆿𑆠 (धौत) 𑆤𑆿 (नौ) 𑆤𑆿𑆔𑆳𑆪𑆟- (नौघायण) 𑆑𑇀𑆫𑆿𑆚𑇀𑆖 (क्रौञ्च) 𑆠𑆿𑆠 (तौत) 𑆨𑆿𑆩 (भौम) 𑆪𑆿𑆮𑆤 (यौवन) 𑆩𑆿𑆤 (मौन)

𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆢𑆼𑆯𑆼 𑆩𑆷𑆱𑆬𑆟𑆳𑆂 (कश्मीरदेशे मूसलणाः)

𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆱𑇀𑆪 𑆳𑆠𑇀𑆩𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆃𑆲𑆁𑆨𑆳𑆮𑆾 𑆲𑆴 𑆑𑆵𑆫𑇀𑆠𑆴𑆠𑆂 -

(प्रकाशस्य आत्मविश्रान्ति अहंभावो हि कीर्तितः ।)

𑆱𑇀𑆮𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆼 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆂 (स्वस्वरूपे विश्रान्ति विमर्शः)

𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆂 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳 𑆑𑆳𑆪𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑆳 𑆱𑆠𑆵 (तत्र ज्ञानं स्वतःसिद्धं क्रिया कायाश्रिता सती), 𑆔𑆛𑆾-𑆩𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆤𑆳 𑆮𑆼𑆢𑇀𑆩𑆴 (घटो मयात्मना वेद्मि । कृत-

𑆥𑆢𑆾𑇁𑆱𑇀𑆩𑆴 𑆩𑆲𑆵𑆯𑆠𑆮𑆼𑆑𑇀𑆰𑆪𑆳 । (कृतपदोऽस्मि-महीशतवेक्षया) । 𑆑𑆴𑆁 𑆃𑆥𑆫𑆼 𑆩𑆸𑆓𑆪𑆼 𑆨𑆮𑆠𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆨𑆾 । (किं अपरे मृगये भवतः प्रभो)

𑆯𑆶𑆨𑆯𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆇𑆢𑆴𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆠𑆮𑆽𑆮 𑆩𑆼 । (शुभ-शतानि उदितानि तवैव मे) 𑆤𑆨𑆳𑆮𑆑𑇀𑆬𑆼-𑆯𑆁 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆠𑆳𑆑𑆳𑆫 (अस्मात्क्लेशं भवन्ते ताकार

𑆤 𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆥𑆫𑆁 𑆢𑆼𑆮𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆫𑆳𑆓𑆼𑆟 𑆫𑆚𑇀𑆘𑆴𑆠𑆳𑆂 ।
(न विन्दन्ति परं देवं विद्यारागेण रञ्जिताः)

𑆪𑆠𑇀 𑆱𑆳𑆫𑆩𑆱𑇀𑆪 𑆘𑆓𑆠𑆂 𑆱𑆳 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆩𑆳𑆬𑆴𑆤𑆵 𑆥𑆫𑆳
(यत् सारमस्य जगतः सा शक्तिः मालिनी परा

"𑆪𑆂 𑆠𑆠𑇀 𑆤 𑆮𑆼𑆢 𑆑𑆴𑆁 𑆋𑆖𑆳 𑆑𑆫𑆴𑆰𑇀𑆪𑆠𑆴"
(यः तत् न वेद किं ऋचा करिष्यति)

𑆱𑆷𑆠 (सूत) 𑆑𑆳 (का) 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 (प्रकाश) 𑆫𑆚𑇀𑆘𑆴𑆠 (रञ्जित)

"चैतन्यमाला"

शारदा - लिपि

का

एक व्यवस्थित

शिक्षिका"

"शोध-कर्ता:
डॉ० त्रिलोकीनाथ गंजू,
82 - हब्बा कदल श्रीनगर
कश्मीर

मुद्रित पाण्डुलिपि का मुद्रण -
प्रकाशन लेखक के अधीन -
रक्षित है"

निश्चित पृष्ठ संख्या;